एक छोटा बहादुर दर्ज़ी

ऐनी मक की

हिंदी: आरती जैन

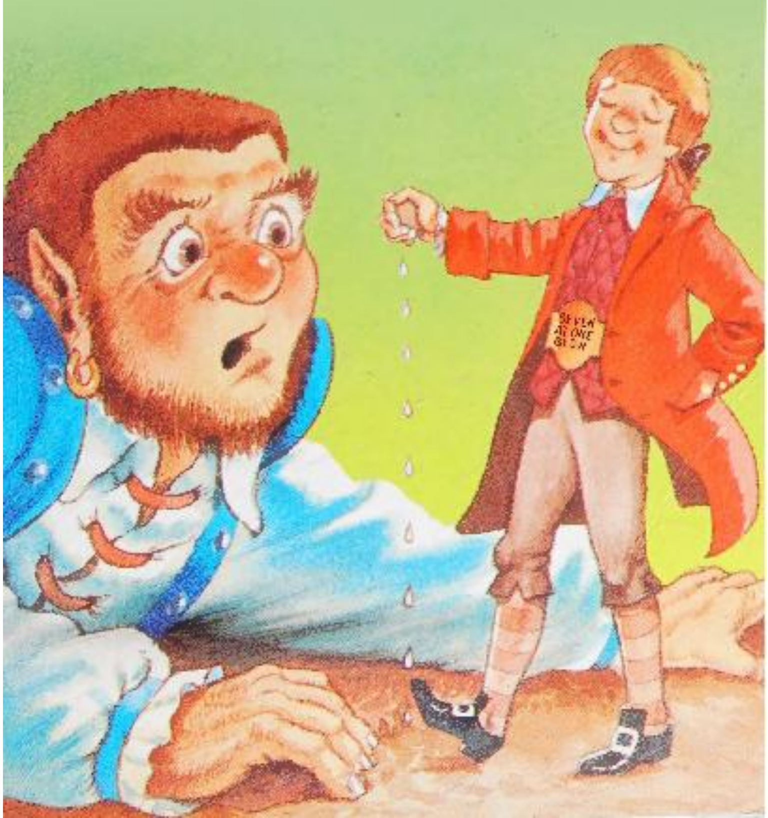

एक छोटा बहादुर दर्ज़ी

ऐनी मक की

हिंदी: आरती जैन

एक सुबह एक दर्जी अपनी खिड़की के पास बैठा पतलून सिल रहा था। काम करते-करते उसने एक क्षण के लिए सिर उठाया और देखा कि एक गाँव की लड़की बाज़ार जा रही है। उसकी टोकरी ताज़े फलों के जैम के मर्तबानों से भरी हुई थी।

दर्जी को जैम बहुत पसंद था। लगभग नाश्ते का समय हो चुका था, इसलिए उसने थोड़ा जैम खरीदा और उसे कुरकुरी रोटी पर लगाकर खाने के लिए तैयार कर लिया। लेकिन पहले उसे पतलून की सिलाई पूरी करनी थी।

अचानक मक्खियों का एक झुंड उड़कर दर्जी की रोटी और जैम पर आ बैठा। यह देखकर वह बहुत क्रोधित हो गया। उसने कपड़े का एक टुकड़ा उठाया और मक्खियों पर ज़ोरदार प्रहार किया।

उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि एक ही वार में सात मक्खियाँ मर गई थीं। वह अपने आप पर बहुत प्रसन्न हुआ।

"मैं कितना अद्‌भुत हूँ!" उसने सोचा। "कितना बहादुर! सारी दुनिया को मेरे बारे में पता चलना चाहिए।"

वह तुरंत बैठ गया और अपने लिए एक बेल्ट बनाने लगा। फिर उसने उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में यह शब्द काढ़ दिए—

"एक ही वार में सात"

"यह बेल्ट मेरी दुकान से बाहर जाएगी और पूरी दुनिया को बता देगी कि मैं कितना बहादुर हूँ," उसने निश्चय किया।

रास्ते में खाने के लिए उसने बकरी के दूध से बना एक छोटा गोल पनीर उठाया और दुकान का दरवाज़ा बंद करके चल पड़ा।

जैसे ही वह आगे बढ़ा, उसने देखा कि एक छोटी भूरी चिड़िया झाड़ी में फँसी हुई है। उसने उसे सावधानी से मुक्त किया और अपनी जेब में रख लिया।

वह गर्व से शहर की गलियों से होकर चला और अपने कारनामे का बखान करता रहा। उसकी बातें सुनकर लोग डर गए।

“एक ही वार में सात!” वे आश्चर्य से फुसफुसाए और फिर भागकर अपने-अपने घरों के दरवाज़े बंद कर लिए।

किसी को यह नहीं पता था कि जिन सात को उसने मारा था, वे केवल मक्खियाँ थीं।

छोटा दर्जी घाटी पार करके पहाड़ी की ओर बढ़ा। अचानक उसकी राह पर एक विशाल छाया पड़ी।

वह एक बहुत बड़ा दैत्य था।

“मेरे रास्ते से हट जाओ!” दर्जी चिल्लाया।

उसने अपना कोट खोलकर अपनी बेल्ट की ओर इशारा किया।

दैत्य ने बेल्ट पर लिखे शब्द पढ़े–

“एक ही वार में सात”

यह पढ़कर वह हक्का-बक्का रह गया। फिर वह ज़ोर से हँसने लगा।

“हम एक प्रतियोगिता करेंगे!” वह गरजा। “यदि तुम जीत गए, तो मैं तुम्हें आगे जाने दूँगा।”

यह कहकर दैत्य ने एक पत्थर उठाया। उसने पूरी ताकत से उसे दबाया, यहाँ तक कि उसमें से पानी की एक बूंद निकल आई।

दर्जी को तुरंत अपनी जेब में रखा छोटा गोल पनीर याद आ गया। उसने उसे एक हाथ से दबाया, और उसमें से पानी टपककर ज़मीन पर गिरने लगा।

दैत्य आश्चर्यचकित रह गया, क्योंकि उसे लगा कि दर्जी ने पत्थर को ही निचोड़ दिया है।

फिर दैत्य ने एक और पत्थर उठाया और उसे पहाड़ी के पार फेंक दिया। थोड़ी देर बाद दोनों ने उसे दूर झील में गिरते हुए सुना, जहाँ वह ज़ोरदार छपाके के साथ पानी में जा गिरा।

पत्थर को गिरते देखकर दर्जी को अपनी जेब में रखी छोटी भूरी चिड़िया याद आ गई। उसने दिखावा किया कि वह भी एक पत्थर फेंक रहा है और चिड़िया को हवा में उछाल दिया। चिड़िया सीधे आकाश में उड़ गई।

"तुम्हारा पत्थर तो झील में गिर गया," छोटे दर्जी ने शेखी बघारते हुए कहा, "लेकिन मेरा कभी धरती पर नहीं गिरेगा!"

दैत्य को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा कि यह छोटा आदमी सचमुच बहुत शक्तिशाली है।

फिर उसने एक और परीक्षा लेने का निश्चय किया।

“यदि तुम इतने बलवान हो, तो इस पेड़ को उठाने में मेरी मदद करो,” दैत्य ने आदेश दिया।

यह कहकर उसने ज़मीन से एक विशाल बलूत (ओक) का पेड़ उखाड़ लिया।

“ठीक है,” दर्जी ने उत्तर दिया। “आप तना उठाइए और मैं शाखाएँ उठाऊँगा, क्योंकि वे अधिक हैं।”

उसने यह बात बड़ी चतुराई से कही।

जैसे ही दैत्य ने पेड़ उठाया, दर्जी फुर्ती से शाखाओं पर चढ़ गया और पत्तों के बीच छिपकर बैठ गया।

बेचारा दैत्य यह समझ ही नहीं पाया कि वह अकेला ही पूरे पेड़ के साथ-साथ उस चतुर दर्जी को भी ढो रहा है।

पेड़ इतना भारी था कि कुछ ही देर में दैत्य थक गया और उसे नीचे रख दिया।

तभी दर्जी शाखाओं से कूदकर नीचे आया और ऐसे खड़ा हो गया मानो वह पूरे समय पेड़ उठाने में मदद कर रहा हो।

दैत्य उसकी कथित ताकत देखकर और भी प्रभावित हो गया।

दैत्य इतना प्रभावित हुआ कि उसने दर्जी को अपने और अपने दो विशाल भाइयों के साथ रात बिताने का निमंत्रण दिया।

रात के भोजन में प्रत्येक दैत्य ने पूरा भुना हुआ भेड़ खा लिया और शराब का एक-एक पूरा पीपा पी गया।

भोजन के बाद उन्होंने दर्जी को सोने के लिए एक बहुत बड़ा बिस्तर दिया।

लेकिन वह बिस्तर उसके लिए इतना विशाल था कि उसने उस पर सोने के बजाय कमरे के एक कोने में सोना बेहतर समझा।

तीनों दैत्य उस छोटे दर्जी से बहुत डरते थे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उसने “एक ही वार में सात” को मार गिराया था।

जब उन्हें लगा कि दर्जी सो गया है, तो वे चुपके से उसके पास आए। उनके हाथों में भारी-भारी डंडे (गदे) थे, और वे उसके बिस्तर की ओर बढ़े...

तीनों दैत्य यह सोचकर आए कि दर्जी गहरी नींद में सो रहा है। उन्होंने अपने भारी डंडों से उसके बिस्तर पर इतनी ज़ोर से प्रहार किया कि बिस्तर पूरी तरह टूट गया। उन्हें पूरा विश्वास था कि अब वह छोटा दर्जी मर चुका होगा।

लेकिन दर्जी तो पूरे समय कमरे के एक कोने में सो रहा था। इसलिए वह बिल्कुल सुरक्षित रहा।

अगली सुबह वह जल्दी उठ गया और सीटी बजाते हुए तथा गुनगुनाते हुए बाहर निकल आया।

जब दैत्यों ने उसे जीवित और प्रसन्न देखा, तो वे भय से काँप उठे। उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि इतना भयंकर प्रहार करने के बाद भी वह बच गया।

डर के मारे वे वहाँ से भाग गए और फिर कभी दिखाई नहीं दिए।

बहादुर छोटा दर्जी पूरे दिन नगरों और गाँवों से होकर चलता रहा। वह अपने कारनामों का बखान करता रहता और अपनी बेल्ट दिखाकर गर्व से पुकारता—

"एक ही वार में सात!"

कई मील चलने के बाद वह एक राजमहल के पास पहुँचा। लंबी यात्रा के कारण वह बहुत थक गया था, इसलिए महल के फाटक के पास ही सो गया।

जब महल के सैनिक वहाँ से गुज़रे, तो उनकी नज़र उसकी बेल्ट पर पड़ी, जिस पर लिखा था—

"एक ही वार में सात"

वे तुरंत राजा को यह समाचार देने दौड़ पड़े।

राजा ने एक सैनिक को भेजकर दर्जी को जगाने और महल में लाने का आदेश दिया। राजा को विश्वास हो गया था कि यह कोई महान वीर है।

उसने समझा कि “एक ही वार में सात” का अर्थ सात आदमी हैं, न कि सात मक्खियाँ।

राजा ने दर्जी से कहा, “हमारे राज्य में दो भयानक दैत्य रहते हैं। उनके अत्याचारों से सभी लोग भयभीत हैं। यदि तुम उन्हें मार गिराओ, तो मैं तुम्हें अपने राज्य का आधा भाग और अपनी पुत्री का हाथ विवाह के लिए दूँगा।” छोटे दर्जी ने आत्मविश्वास से कहा, “यह काम मुझ पर छोड़ दीजिए!”

दर्ज़ी तुरंत दैत्यों की खोज में निकल पड़ा। राजा ने उसकी सहायता के लिए अपने सौ श्रेष्ठ सैनिकों को भी उसके साथ भेज दिया।

जब वे उस स्थान के पास पहुँचे जहाँ दैत्य रहते थे, तो दर्ज़ी सैनिकों की ओर मुड़ा और बोला,

“तुम सब यहीं सुरक्षित रहो। मैं अकेला ही दैत्यों का सामना करूँगा।”

सैनिक आश्चर्यचकित रह गए। वे सोचने लगे कि कोई व्यक्ति इतना साहसी कैसे हो सकता है!

लेकिन उन्हें याद था कि यह वही वीर है जिसने “एक ही वार में सात” को मार गिराया था।

दर्जी चुपचाप आगे बढ़ा और चारों ओर नज़र दौड़ाने लगा। आखिरकार उसे दोनों दैत्य दिखाई दे गए। वे एक बड़े पेड़ के नीचे गहरी नींद में सो रहे थे। दर्जी ने जल्दी-जल्दी अपनी जेबें भारी पत्थरों से भर लीं और फिर पेड़ पर चढ़ गया।

पेड़ की शाखाओं पर बैठकर उसने चुपके से एक पत्थर एक दैत्य पर गिराया। फिर उसने दूसरा पत्थर दूसरे दैत्य पर फेंक दिया। दोनों दैत्य गुस्से में जाग उठे। हर एक को लगा कि दूसरे ने उसे मारा है।

अगले ही क्षण दोनों दैत्य आपस में लड़ने लगे। क्रोध में उन्होंने पेड़ उखाड़ डाले और एक-दूसरे पर बड़े-बड़े पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। उनकी लड़ाई इतनी भयंकर थी कि वे पूरे जंगल में लुढ़कते हुए पेड़ों को चपटा करते चले गए।

दोनों दैत्य क्रोध में इतने अंधे हो गए थे कि वे लड़ते-लड़ते पहाड़ी से नीचे लुढ़क गए। रास्ते में उन्होंने खलिहान, बाड़ें और घास के ढेर सब नष्ट कर दिए। वे लड़ाई में इतने व्यस्त थे कि अंततः एक ऊँची चट्टान से नीचे समुद्र में जा गिरे। इसके बाद उनका कभी कोई पता नहीं चला।

बहादुर छोटा दर्जी अपना इनाम लेने महल लौट आया। लेकिन राजा ने देखा कि उसका काम अभी पूरा नहीं हुआ है। उसने दर्जी के लिए दो और कठिन कार्य तैयार कर रखे थे।

राजा ने कहा, "मेरे जंगल में एक यूनिकॉर्न और एक जंगली सूअर घूमते रहते हैं। वे लोगों के लिए बहुत परेशानी का कारण हैं। यदि तुम उन्हें पकड़ लाओ, तभी मैं तुम्हें अपने राज्य का आधा भाग और अपनी पुत्री का हाथ दूँगा। मेरे शिकारी तुम्हारी सहायता करेंगे।"

दर्जी हँसकर बोला, "यह तो बहुत आसान है!" और वह तुरंत यात्रा पर निकल पड़ा। वह इतनी तेज़ी से दौड़ा कि कुछ ही समय में राजा के शिकारी उससे बहुत पीछे रह गए।

अचानक उसे यूनिकॉर्न अपनी ओर दौड़ता हुआ दिखाई दिया। वह तेज़ी से उसकी ओर बढ़ रहा था। दर्जी फुर्ती से एक पेड़ के पीछे कूद गया। यूनिकॉर्न अपनी रफ्तार रोक नहीं पाया और उसका लंबा सींग पेड़ के तने में गहराई तक फँस गया। इस प्रकार दर्जी ने अपनी चतुराई से उसे पकड़ लिया।

दर्जी पेड़ के पीछे से बाहर आया और मन ही मन सोचने लगा, “मैं कितना बुद्‌धिमान हूँ!”

लेकिन अगले ही क्षण उसकी खुशी डर में बदल गई। एक विशाल जंगली सूअर गुस्से में उसकी ओर दौड़ता हुआ आ रहा था। दर्जी तुरंत मुड़ा और अपनी जान बचाने के लिए भाग खड़ा हुआ।

जंगली सूअर पूरी रफ्तार से दर्जी के पीछे दौड़ रहा था। दर्जी जितनी तेज़ दौड़ सकता था, दौड़ता गया, लेकिन सूअर लगातार उसके पीछे बना रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह इस संकट से कैसे बचेगा।

दौड़ते-दौड़ते अचानक उसकी नज़र एक खुले स्थान में बनी एक छोटी झोपड़ी पर पड़ी। वह पूरी ताकत से उसकी ओर भागा। झोपड़ी का दरवाज़ा खोलकर वह अंदर घुसा और तुरंत एक ओर हट गया।

जंगली सूअर बिना रुके सीधे झोपड़ी के अंदर घुस गया। उसी क्षण दर्जी ने फुर्ती से दरवाज़ा बंद कर दिया।

अब सूअर झोपड़ी के भीतर कैद हो चुका था।

कुछ देर बाद राजा के शिकारी भी वहाँ पहुँच गए। उन्होंने देखा कि यूनिकॉर्न पकड़ा जा चुका है और जंगली सूअर भी कैद है। वे आश्चर्यचकित रह गए कि छोटे दर्जी ने यह काम अकेले ही कर दिखाया।

जब वे महल पहुँचे, तो राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, “बहादुर छोटे दर्जी, तुमने मेरे सभी कठिन कार्य पूरे कर दिए हैं।

जैसा वचन दिया था, मैं तुम्हें अपने राज्य का आधा भाग और अपनी पुत्री का हाथ विवाह के लिए देता हूँ।”

राजा की पुत्री का विवाह बहादुर छोटे दर्जी से धूमधाम से कर दिया गया।